

ऋषभ पुं. (तत्.) 1. बैल, वृषभ 2. श्रेष्ठ जैसे- पुरुषर्षभ-(पुरुषश्रेष्ठ) 3. संगीत के सात स्वरों में से दूसरा।

ऋषभगजविनासिता स्त्री. (तत्.) एक समवर्णिक छंद का नाम, जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः भगण, रगण, तीन नगण और गुरु के योग से 16 वर्ण होते हैं और 7-9 पर यति होती है।

ऋषभदेव पुं. (तत्.) 1. भागवत पुराण के अनुसार राजा नाभि के पुत्र 2. जैन धर्म के आदि तीर्थंकर।

ऋषभध्वज पुं. (तत्.) जिनकी ध्वजा पर ऋषभ (बैल) का निशान है अर्थात् शिव।

ऋषिक पुं. (तत्.) अधम श्रेणी का ऋषि, 'ऋषिक' नामक जनपद और उसका निवासी।

ऋषिकल्प वि. (तत्.) ऋषि के समान पूज्य, विचारशील और सदाचारी।

ऋषिकुल पुं. (तत्.) 1. ऋषि का वंश 2. ऋषि-आश्रम, गुरुकुल

ऋषि-तर्पण पुं. (तत्.) ऋषियों की तृप्ति के लिए उनके नाम पर किया जाने वाला जलदान।

ऋषि पंचमी स्त्री. (तत्.) भाद्र पक्ष शुक्ल की पंचमी।

ऋषियज्ञ पुं. (तत्.) ऋषियों के ऋण से युक्त होने के लिए किया जाने वाला यज्ञ, वेदाध्ययन।

ऋषिहृदय पुं. (तत्.) ऋषियों जैसे हृदय वाला परमसज्जन और सदाचारी, आचार-विचार में अच्छा।

ऋषीश्वर पुं. (तत्.) ऋषियों के स्वामी, प्रमुख ऋषि।

ऋष्टि स्त्री. (तत्.) 1. तलवार, खड्ग 2. अस्त्र।

ऋष्य पुं. (तत्.) 1. काले रंग का एक प्रकार का हिरन 2. कुष्ठ रोग का एक प्रकार।

ऋष्यमूक पुं. (तत्.) पंपा सरोवर के निकट का एक पर्वत जहाँ बनवास काल में राम ने कुछ दिन सुग्रीव के साथ बिताए थे।

ए

ए पुं. (तत्.) 1. हिंदी वर्णमाला का आठवां स्वर वर्ण जिसका उच्चारण स्थान कंठतालव्य है 2. अव्य. स्मरण, ईर्ष्या, दया, आह्वान, तिरस्कार अथवा धिक्कार का सूचक शब्द 3. अव्य. (फा) बुलाने या संबोधनात्मक रूप में प्रयुक्त शब्द।

एंटी स्त्री. (अं.) 1. प्रवेश, प्रविष्टि 2. प्रतियोगिता या भवन में प्रविष्टि 3. कोश आदि में शब्द की प्रविष्टि 4. रजिस्टर में व्यक्ति, माल के आवाक/जावक की प्रविष्टि 5. सरकारी दस्तावेजों, सेवा पंजिकाओं में प्रविष्टि।

एंजुलेंस पुं. (अं.) रोगी वाहन, रोगियों या घायलों को ले जाने वाली गाड़ी, चलता-फिरता चिकित्सालय।

ऐं पुं. (तद्.) 1. महादेव, शिव 2. आमंत्रण, स्मरण आदि अर्थ में प्रयुक्त।

ऐंच-पेंच पुं. (देश.) 1. हेर-फेर, घुमाव-फिराव 2. वक्र गति, टेड़ी चाल 3. अटकाव, उलझाव, उलझन 4. गूढ़ कथन 5. दांव-पेच।

ऐँड़ पु. (देश.) गर्व या अभिमान का भाव, ऐँठन।

ऐँड़ना अ.क्रि. (देश.) 1. अंगड़ाना, देह तोड़ना 2. अकड़ना।

ऐँड़ी स्त्री. (तद्.) 1. अंडी के पत्ते खाने वाला रेशम का कीड़ा 2. उक्त कीड़े का रेशम।

एक वि. (तत्.) 1. इकाइयों में सबसे छोटी और पहली संख्या 2. समूह में से अकेला-अकेली वस्तु या व्यक्ति 3. अकेला, अद्वितीय 4. कोई अनिश्चित मुहा. एक अनार सौ बीमार- किसी चीज के अनेक चाहनेवाले; एक आँख से देखना- समान भाव रखना; एक-एक कर के दो-होना- काम बढ़ना; एक और एक ग्यारह होना- आपस में मिलने से शक्ति को बढ़ना; एक के स्थान